दो हाथ

इस्मत चुगताई

चित्रांकन
शुद्धसत्व बासु

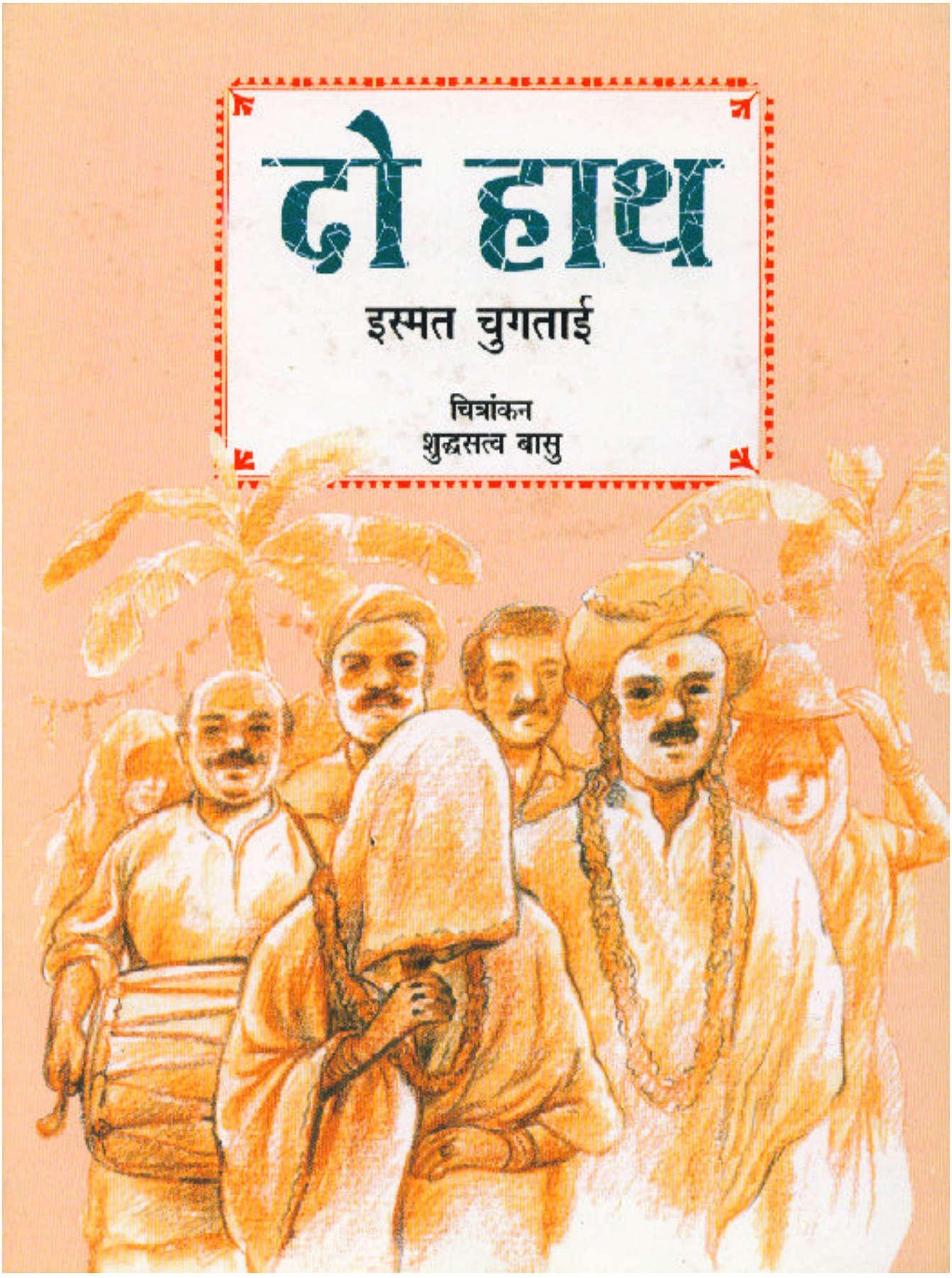

इस्मत चुग़ताई

उर्दू-कथा साहित्य में इस्मत चुग़ताई जी की एक अपनी पहचान है। उन्होंने समाज की रूढ़िवादी परम्परा को कभी भी स्वीकार नहीं किया। उन्होंने अपनी कहानियों में सामाजिक सच्चाईयों को इस प्रकार बयान किया है कि उन सच्चाईयों को नकारा नहीं जा सकता। उनके कुछ प्रमुख उपन्यास - 'जिद्दी' और 'टेढ़ी लकीर' हैं।

कुछ समय तक चुग़ताई जी फिल्म निर्माण से जुड़ी रहीं। आदमी द्वारा आदमी पर होने वाले जुल्म और समाज के खोखलेपन को चुग़ताई जी व्यंग्यात्मक रूप में प्रकट कर देती हैं। 'दो हाथ' भी ऐसी ही एक कहानी है।

बूढ़ी मेहतरानी की आँखों में, आँसू टिमटिमा रहे थे।. उसका बेटा, राम अवतार जो घर आ रहा था।

पूरे तीन साल बाद !

शादी के पहले ही साल फौज से उसका बुलावा आ गया था। उस दिन के बाद, अब कहीं आना हो रहा था।

मुहल्ले के सभी लोग, राम अवतार की राह देख रहे थे। सब को उसके लौटने के बाद होने वाले, ड्रामे का इंतज़ार था।

माना, राम अवतार लाम पर तोप-बन्दूक छोड़ने नहीं गया। फिर भी सिपाहियों का मैला उठाते-उठाते उसमें कुछ सिपाहियाना अकड़ तो पैदा हो ही गई होगी। ऐसा कैसे हो सकता है कि वह, अपनी बीवी की करतूत सुने और उसका खून न खोले।

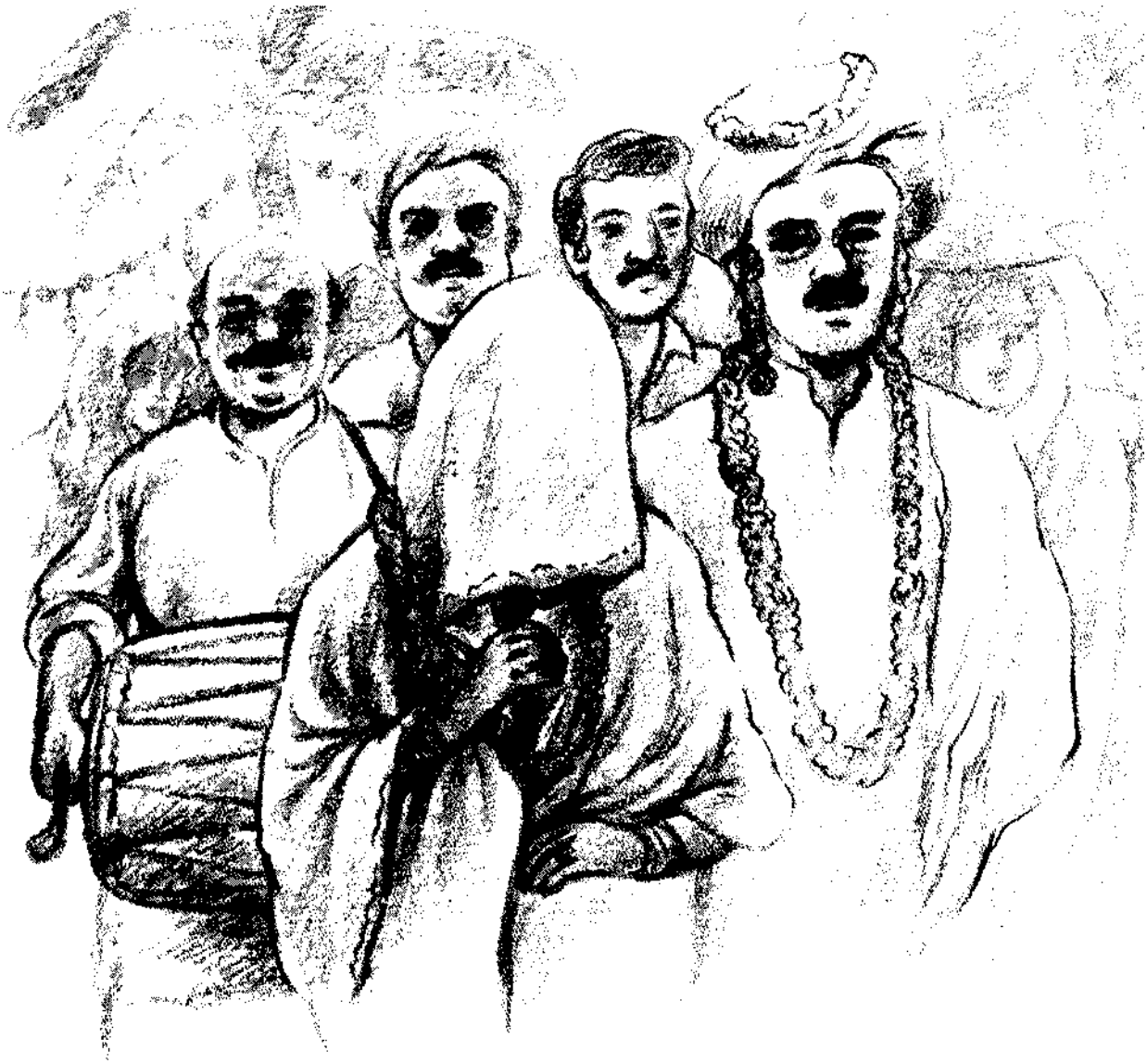

जब शादी कर के आई थी तो क्या मुसमसी थी, गोरी। जब तक राम अवतार रहा उसका घूँघट, फुट-भर लम्बा रहा। जिस दिन पति लाम को गया तो कैसे, बिलख-बिलख कर रोई थी। थोड़े दिन रोई-रोई आँखें लिए, सिर झुकाये मैले की टोकरी उठाती रही।

फिर धीरे-धीरे उसके घूँघट की लंबाई, कम होती गई। राम अवतार के जाते ही सब कुछ, बदल-सा गया। बात-बात पर ही-ही, हर वक्त का इठलाना। कमर पर मैले की टोकरी लेकर, काँसे के कड़े छनकाती जिधर से निकलती, लोगों की जान ही निकल जाती। धोबी के हाथ से साबुन की बट्टी फिसलकर, तालाब में गिर जाती। रसोइया तवे पर, जलती हुई रोटी छोड़ देता। भिश्ती का डोल कुँए में डूबता ही चला जाता।

नाम की गोरी, थी पूरी काली । चौड़ी फुकना - सी नाक, फैला हुआ दहाना और दाँत ऐसे, जैसे कभी मंजन ही न देखा हो । आँखों में काजल थोपने के बाद भी, दाईं आँख का भैंगापन छुपता न था । कमर भी लचकदार न थी । झूठन खा-खाकर, चौड़ी हो रही थी ।

लेकिन फिर भी जहाँ से निकल जाती, क़यामत ही आ जाती ।

राम अवतार के जाने के बाद, बूढ़ी मेहतरानी का सारा काम बहू ने संभाला । बहू के दोनों हाथों के भरोसे ही उसका सारा बुढ़ापा बीत रहा था । बहू के करम बूढ़िया से छिपे न थे । पर बुढ़िया में इतना दम कहाँ कि दो सौ रुपये में लाई गई बहू को, वापिस भेज दे । उस का बाप तो चार सौ में उसकी दूसरी शादी करा देगा । लेकिन बुढ़िया कैसे संभालेगी पूरे मुहल्ले का काम । यह सोच वह चुप रहती ।

दो-चार दिन के बाद बूढ़ी मेहतरानी के देवर का लड़का रतीराम उससे मिलने आया। फिर वहीं रह गया। दो-चार कोठियों मे काम बढ़ गया था, वह उसने संभाल लिया। अपने गाँव में, आवारा ही तो घूमता था।

रतीराम के आते ही, सारा मौसम बदल गया। बहू के कहकहे बंद हो गये। काँसे के कड़े, गूँगे हो गये। घूँघट झूलते-झूलते, नीचे की ओर बढ़ने लगा।
अब वह एक शरमीली-सी बहू बन गई थी।

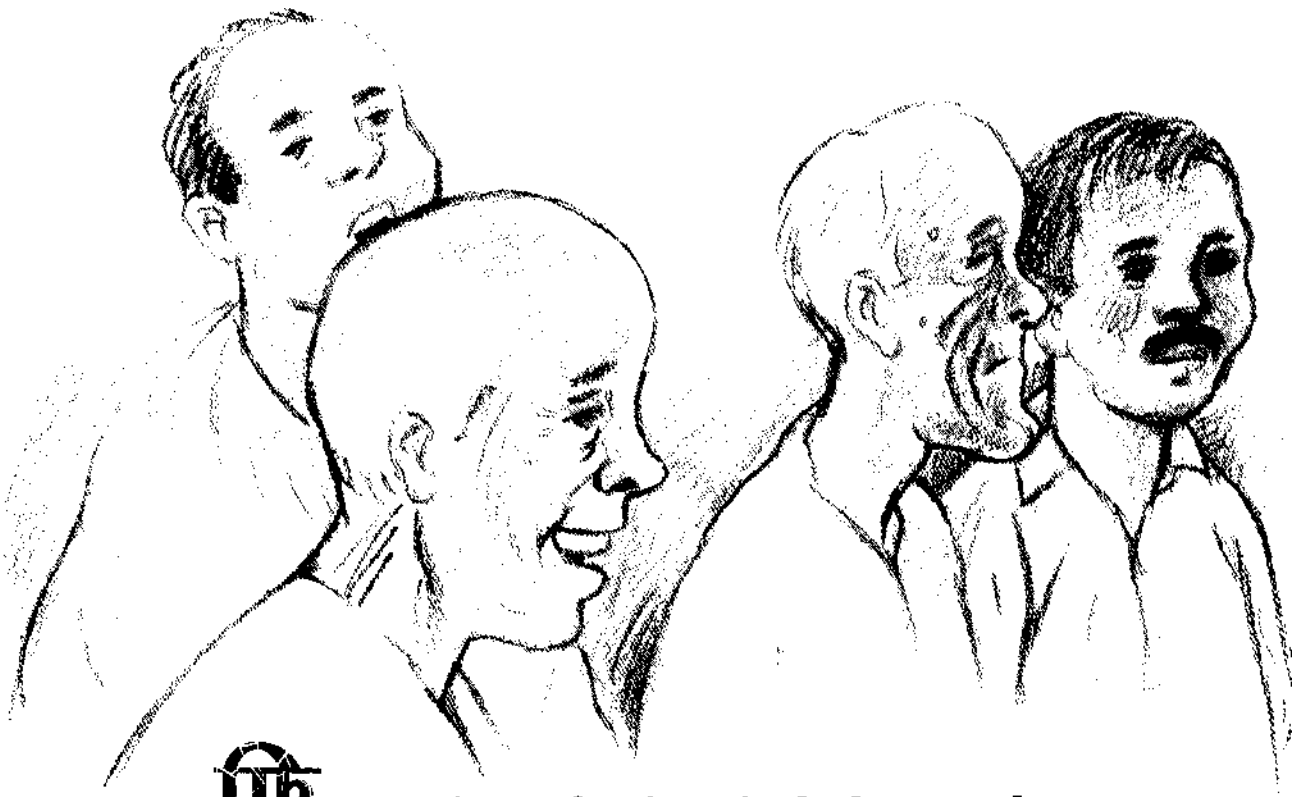

फिर एक दिन दारोगाजी दाढ़ीवाले ने, बहू और रतीराम के गलत संबंधों के बारे में सबको बताया। बूढ़ी मेहतरानी को बुलाया गया। पूछने पर बुढ़िया ने उल्टे शोर मचाया। कहने लगी कि, लोग बेकार उसके दुश्मन बन गये हैं। चूँकि राम अवतार नहीं है, तो लोग उसकी बहू को बुरी नज़र से देखने लगे हैं। बहू बेचारी तो सुबह शाम अपने पति की याद में, आँसू बहाया करती है। जान तोड़कर काम-काज़ करती है। किसी को भी शिकायत का अवसर नहीं देती।

कुछ दिन के बाद बहू के प्यार के चर्चे, कम होने लगे। लोग कुछ-कुछ भूलने लगे। मगर ताड़ने वालों ने, ताड़ ही लिया कि दाल में कुछ काला है। बहू का दिन-ब-दिन मोटा होता शरीर, लोगों से ज्यादा दिन नहीं छुपा रह सका। लोगों ने बुढ़िया को समझाया, 'रतीराम का मुँह काला कर इससे पहले कि राम अवतार लौटे, बहू का इलाज करवा डाल। दो दिन में सफाई हो सकती है।'

पर न जाने बुढ़िया को क्या हो गया था। जिस बला को आसानी से कूड़े में दफना सकती थी, उसे आँख मीचे पलने दे रही थी।

कुछ दिनों बाद बहू ने, एक बेटे को जन्म दिया। लोगों को तब बहुत हैरानी हुई, जब उसे जहर देने के बजाय खुशी से बुढ़िया की बाँछे खिल गई। राम अवतार के जाने के दो साल बाद पोता होने पर, वह बिल्कुल भी हैरान न थी। झट राम अवतार को चिट्ठी लिखवाई, 'राम अवतार को ढेर सारा प्यार। यहाँ सब कुशल है। खबर यह है कि तुम्हारे घर में पूत पैदा हुआ है। सो तुम इस खत को तार समझो और जल्दी से आ जाओ।'

लड़का करीब साल भर का होगा, जब राम अवतार लौटा। राम अवतार को देखते ही बुढ़िया, उसकी कमर से लिपटकर रोने लगी। राम अवतार लड़के को देखकर ऐसे शरमाने लगा, जैसे वही उसका बाप हो। झट सन्दूक खोलकर उसमें से लाल बनियान और पीले मोजे निकालने लगा।

राम अवतार की इस हरकत पर लोगों को हैरानी से ज़्यादा गुस्सा आया ।

'क्यों भई, तू तीन साल बाद लौटा है, न ?'

'मालूम नहीं हजूर, थोड़ा कम-जियादा ... इत्ता ही रहा होगा ।'

'इधर लड़का साल-भर का है ।'

'इत्ता ही लगे है, पर है बड़ा बदमाश !' राम अवतार शरमाया ।

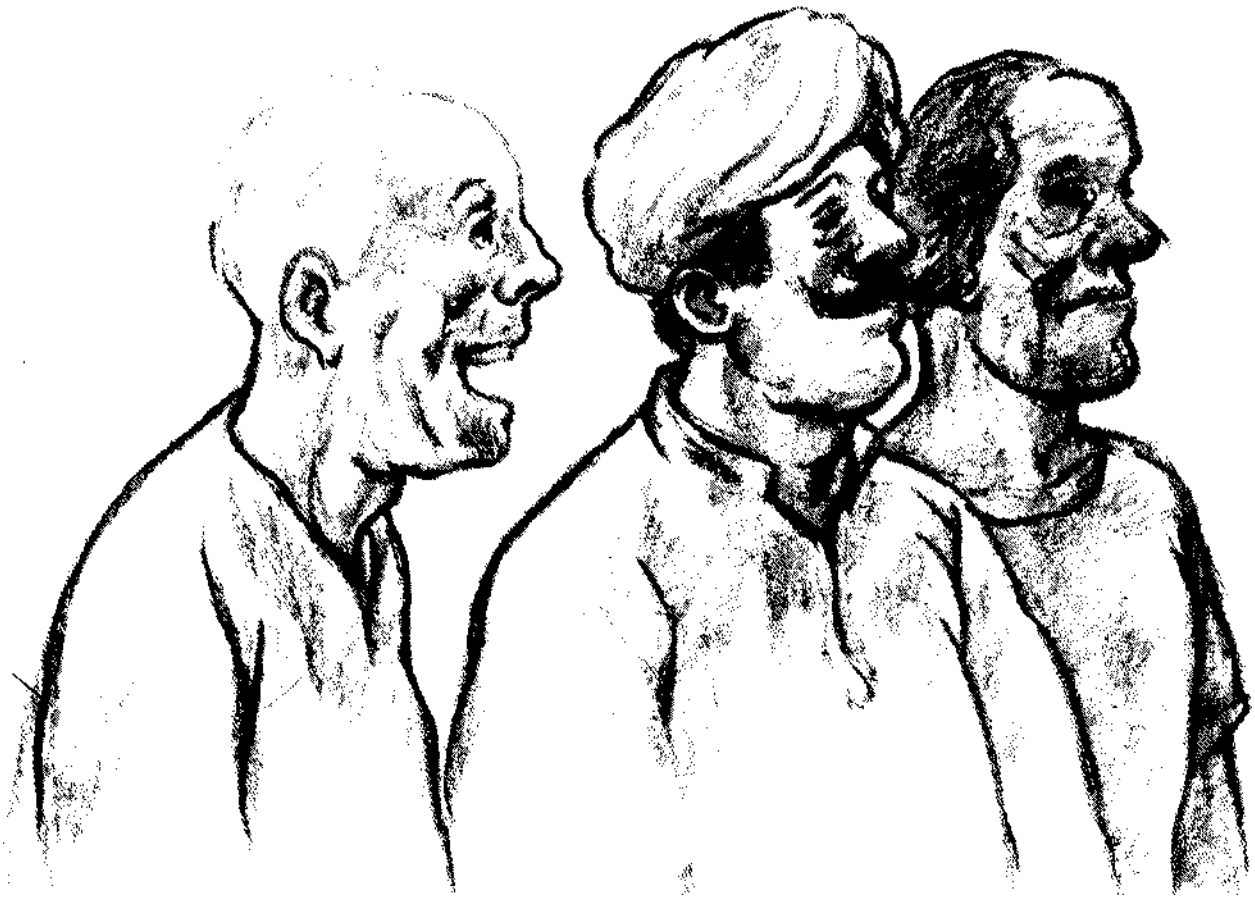

'अब तू खुद ही हिसाब लगा ले ।'

'जब ... क्या लगाऊँ सरकार !'

'अरे बेवकूफ ! यह हुआ कैसे ?'

'अब जे मैं क्या जानूँ, सरकार । भगवान की देन है ।'

'भगवान की देन ! तेरा सर ... यह लड़का तेरा नहीं हो सकता ।'

'तो अब का करूँ सरकार... गोरी को मैंने बड़ी मार दी,' वह गुस्से से बिफरकर बोला ।

'अरे ... निकाल बाहर क्यों नहीं करता उस को ?'

'नहीं सरकार, कहीं ऐसा हो सके है ?' राम अवतार घिघियाने लगा ।

'क्यों भई ?'

'हजूर, ढाई-तीन सौ फिर दूसरी सगाई के लिए कहाँ से लाऊँगा और बिरादरी जिमाने में सौ दो-सौ अलग खर्च हो जाएंगे ।'

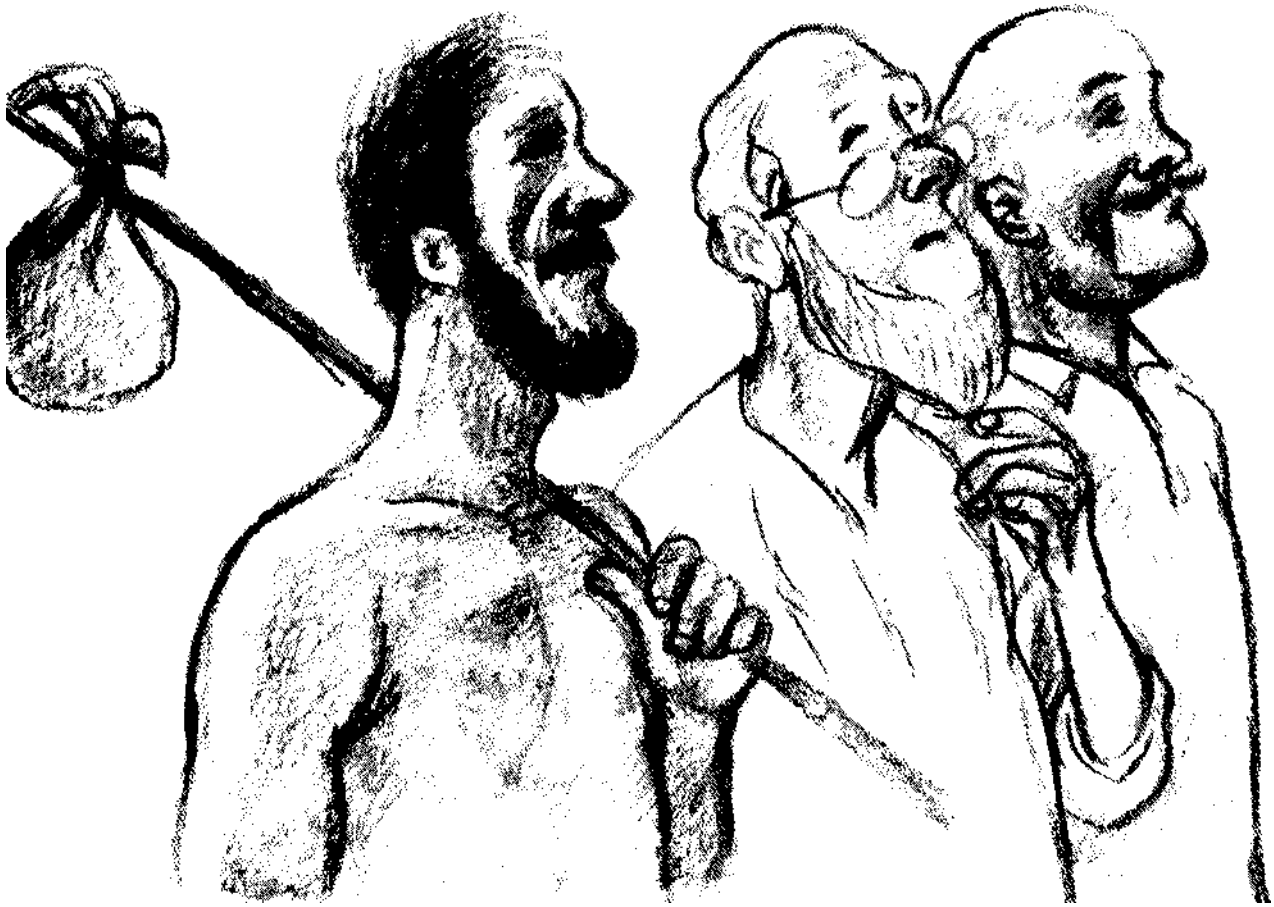

'क्यों भई, तुझे बिरादरी क्यों खिलानी पड़ेगी ? बहू की बदमाशी का फल तुझे क्यों भुगतना पड़ेगा ?'

'जे मैं न जानूँ सरकार, हमारे में ऐसा ही होवे है ।'

'मगर लड़का तेरा नहीं राम अवतार... उस हरामी रतीराम का है ।'

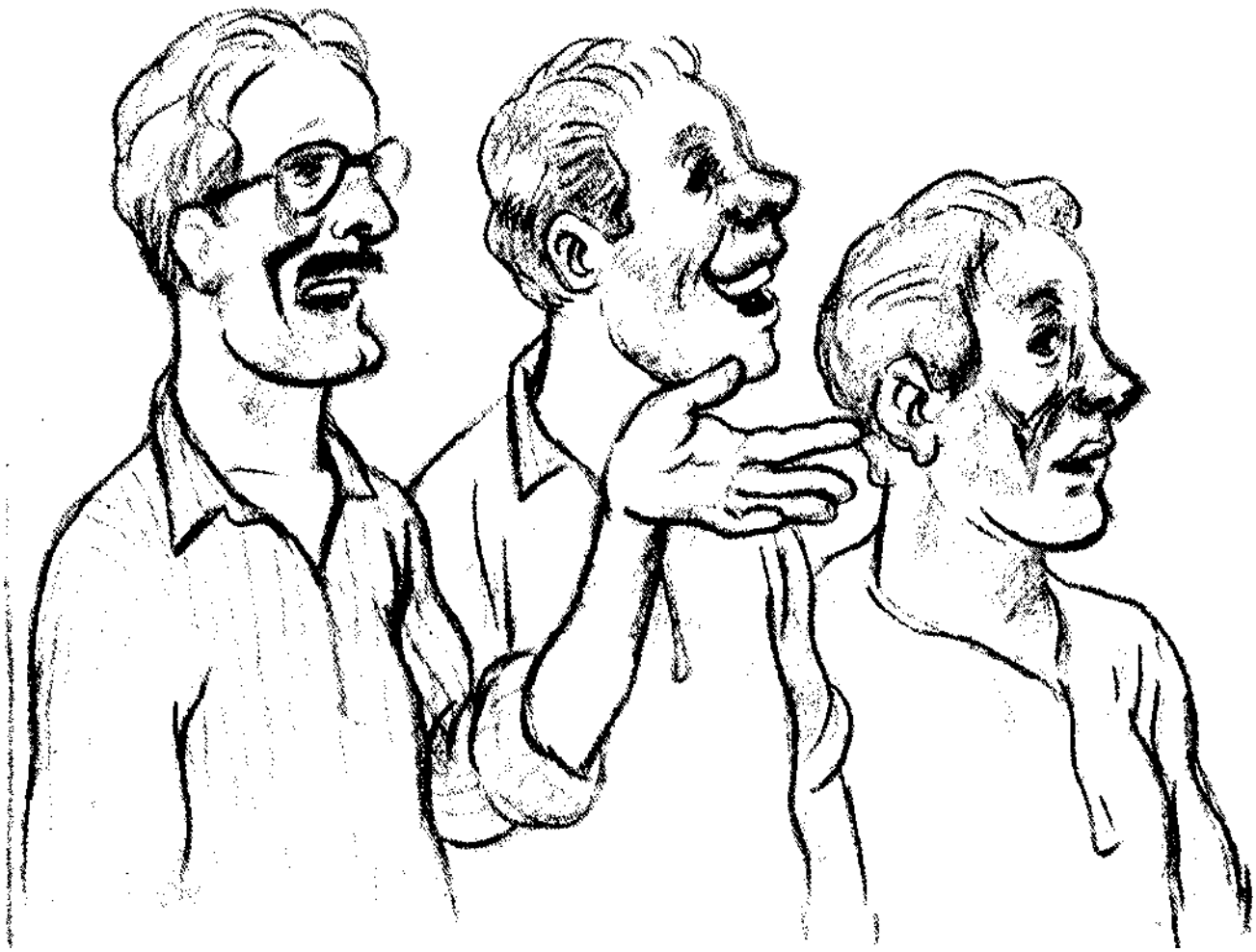

'तो क्या हुआ सरकार ... मेरा भाई होता है रतीराम कोई गैर नहीं, अपना ही खून है ।'

'बिल्कुल बेवकूफ है, तू ।'

'सरकार, लड़का बड़ा हो जायेगा, मेरा हाथ बँटायेगा,' राम अवतार ने गिड़गिड़ाकर समझाया । 'वह दो हाथ लगायेगा, सो अपना बुढ़ापा पार हो जायेगा ।'

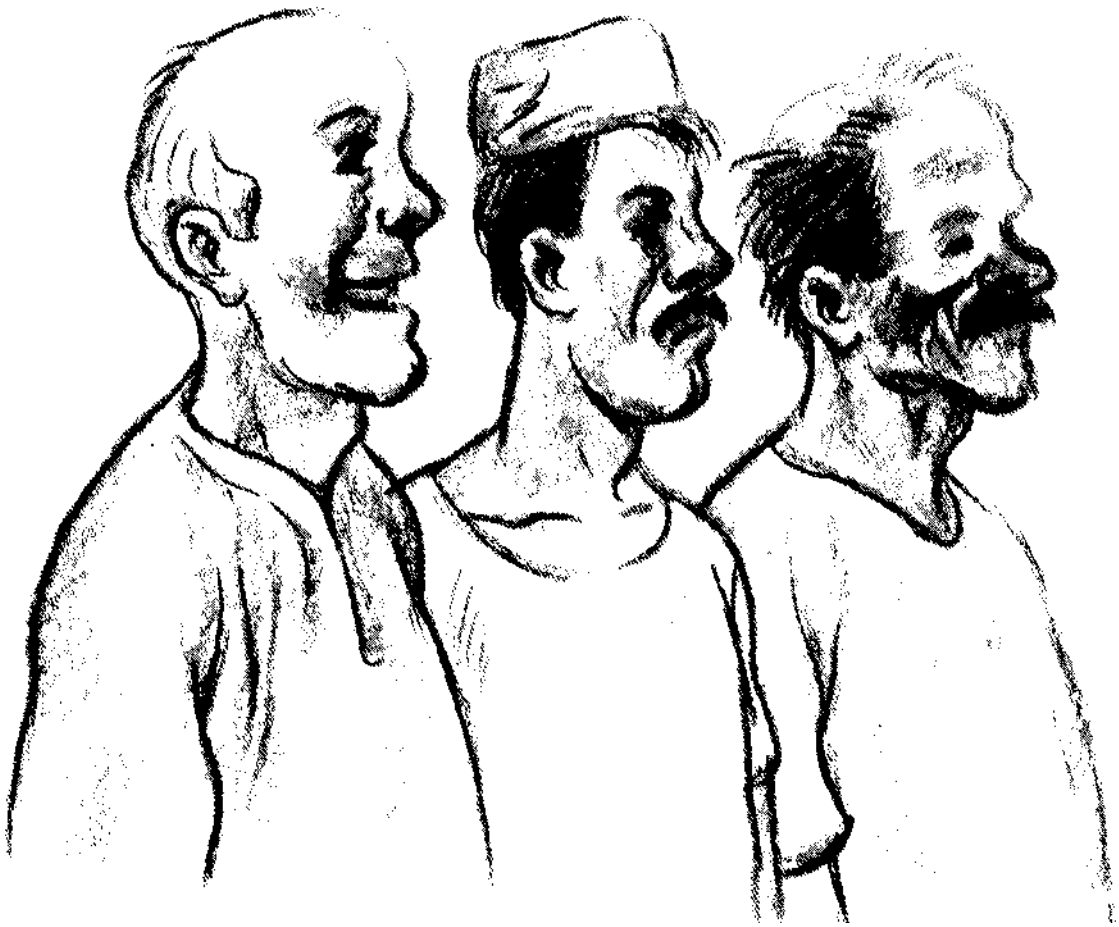

और न जाने क्यूँ, राम अवतार के साथ सबका सिर झुक गया ।

मानों हृदय में लाखों करोड़ो हाथ छा गये हों हाथ, जो न हरामी हैं और न हलाली । ये तो बस जीते जागते हाथ हैं, जो दुनिया का बोझ कम कर रहे हैं ।